



Harshverdhan Upadhyay

03 Jul 2010

10:08 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121800701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 03/07/2010
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 10:08:00 घंटे
इष्ट _____: 11:41:05 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 09:46:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:04:11 घंटे
साम्पातिक काल _____: 04:31:16 घंटे
सूर्योदय _____: 05:27:34 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:22:51 घंटे
दिनमान _____: 13:55:18 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 17:09:41 मिथुन
लग्न के अंश _____: 16:30:28 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: पू०भाद्रपद - 4
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: सौभाग्य
करण _____: विष्टि
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सिंह
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: दी-दीपांकर
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1932	आषाढ़	12
पंजाबी	संवत : 2067	आषाढ़	19
बंगाली	सन् : 1417	आषाढ़	18
तमिल	संवत : 2067	आनी	19
केरल	कोल्लम : 1185	मिथुनम	19
नेपाली	संवत : 2067	आषाढ़	19
चैत्रादि	संवत : 2067	आषाढ़	कृष्ण 7
कार्तिकादि	संवत : 2067	ज्येष्ठ	कृष्ण 7

पंचांग

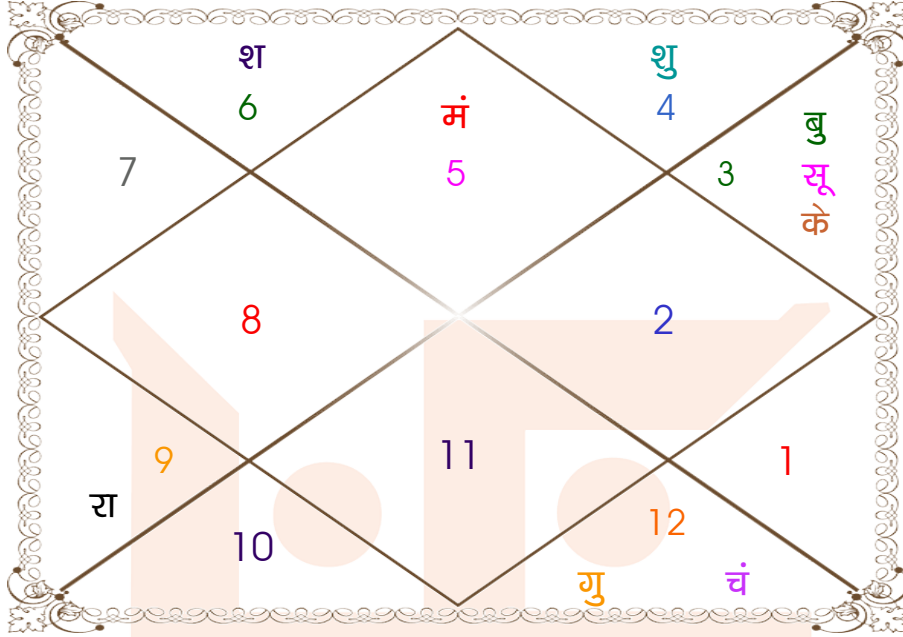
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
तिथि समाप्ति काल _____ : 07:12:33
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 13:54:32 घंटे
जन्म योग _____ : पू०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____ : सौभाग्य
योग समाप्ति काल _____ : 18:53:52 घंटे
जन्म योग _____ : सौभाग्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति काल _____ : 18:12:53 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 57:44:50
भभोग _____ : 67:11:09
भोग्य दशा काल _____ : गुरु 2 वर्ष 3 मा 2 दि

घात चक्र

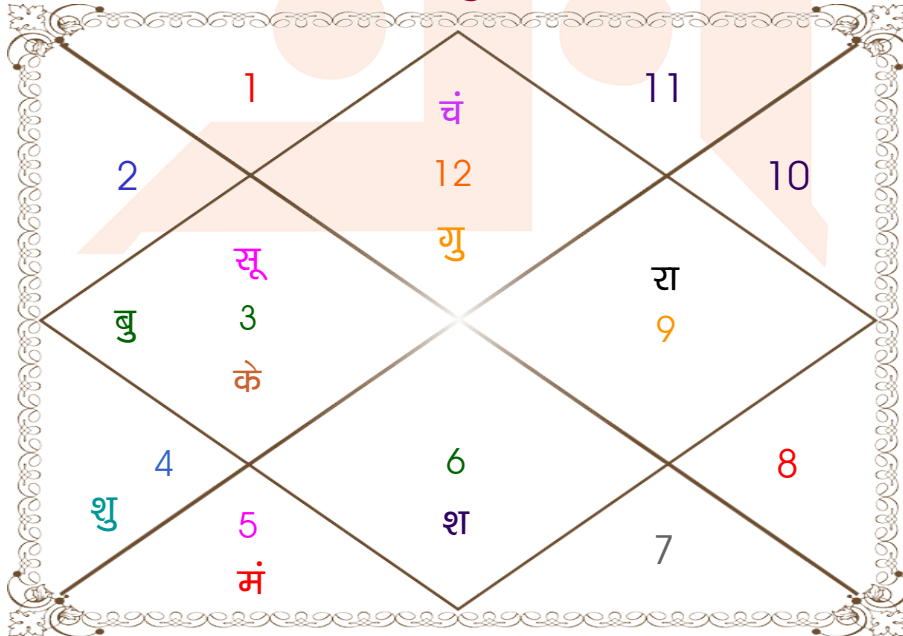
मास _____ : फाल्गुन
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : आश्लेषा
योग _____ : वज्र
करण _____ : चतुष्पाद
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : सिंह
सूर्य _____ : मिथुन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : कर्क
बुध _____ : कुम्भ
गुरु _____ : सिंह
शुक्र _____ : कन्या
शनि _____ : वृष
राहु _____ : तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

गु चं		के सू बु
		शु
		मं ल
रा		श

लग्न कुण्डली

के बु	सू	गु चं
	शु	
ल मं	श	रा

विंशोत्तरी
गुरु 2वर्ष 3मा 2दि
गुरु

03/07/2010

05/10/2116

गुरु	04/10/2012
शनि	05/10/2031
बुध	04/10/2048
केतु	05/10/2055
शुक्र	05/10/2075
सूर्य	05/10/2081
चन्द्र	05/10/2091
मंगल	05/10/2098
राहु	05/10/2116

योगिनी

भामरी 0वर्ष 6मा 23दि
सिद्धा

25/01/2022

25/01/2029

सिद्धा	06/06/2023
संकटा	25/12/2024
मंगला	06/03/2025
पिंगला	26/07/2025
धान्या	24/02/2026
भामरी	05/12/2026
भद्रिका	25/11/2027
उल्का	25/01/2029

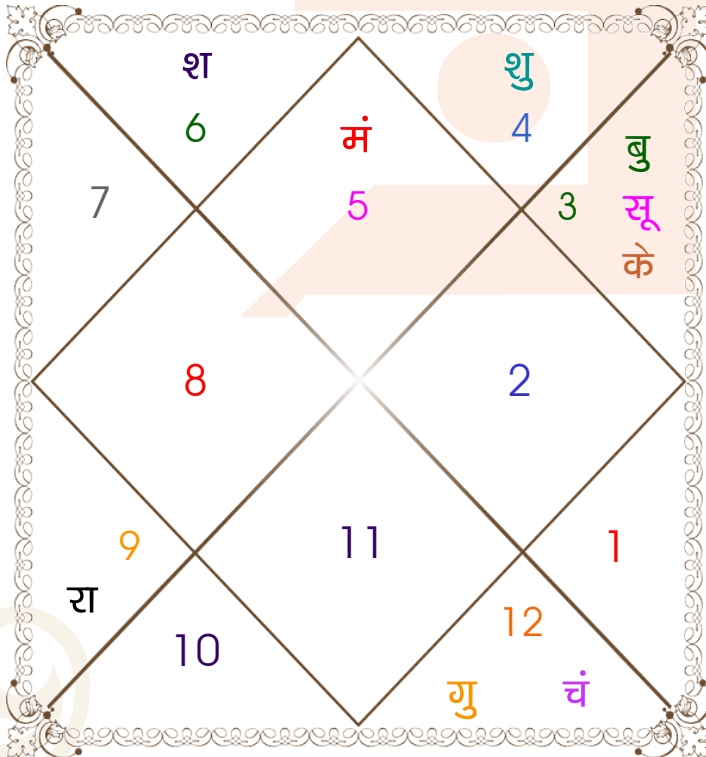
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद नं.	रा न	न अं.	स्थिति
लग्न	सिंह	16:30:28	315:20:31	पू०फाल्गुनी	1 11	सूर्य	शुक्र	चंद्र ---
सूर्य	मिथु	17:09:41	00:57:12	आर्द्रा	4 6	बुध	राहु	शुक्र सम राशि
चंद्र	मीन	01:27:09	11:56:47	पू०भाद्रपद	4 25	गुरु	गुरु	राहु सम राशि
मंगल	सिंह	20:10:27	00:34:11	पू०फाल्गुनी	3 11	सूर्य	शुक्र	गुरु मित्र राशि
बुध	अ मिथु	22:48:10	02:06:58	पुनर्वसु	1 7	बुध	गुरु	शनि स्वरशि
गुरु	मीन	08:43:48	00:03:52	उ०भाद्रपद	2 26	गुरु	शनि	शुक्र स्वरशि
शुक्र	कर्क	27:44:38	01:08:21	आश्लेषा	4 9	चंद्र	बुध	गुरु शत्रु राशि
शनि	कन्या	04:45:15	00:03:15	उ०फाल्गुनी	3 12	बुध	सूर्य	शनि मित्र राशि
राहु	धनु	17:56:36	00:00:11	पूर्वाषाढा	2 20	गुरु	शुक्र	मंगल नीच राशि
केतु	मिथु	17:56:36	00:00:11	आर्द्रा	4 6	बुध	राहु	सूर्य नीच राशि
हर्ष	मीन	06:34:50	00:00:07	उ०भाद्रपद	1 26	गुरु	शनि	बुध ---
नेप	व कुंभ	04:25:17	00:00:58	धनिष्ठा	4 23	शनि	मंगल	शुक्र ---
प्लूटो	व धनु	09:54:47	00:01:31	मूल	3 19	गुरु	केतु	शनि ---
दशम भाव	वृष	15:29:09	--	रोहिणी	-- 4	शुक्र	चंद्र	गुरु --

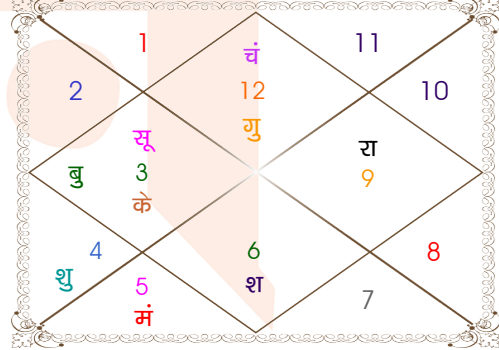
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:31

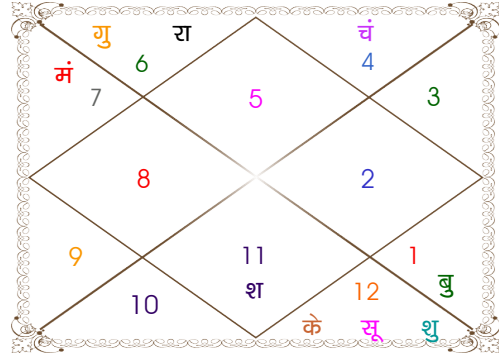
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 01:20:15	सिंह 16:30:28
2	कन्या 01:20:15	कन्या 16:10:02
3	तुला 00:59:48	तुला 15:49:35
4	वृश्चिक 00:39:22	वृश्चिक 15:29:09
5	धनु 00:39:22	धनु 15:49:35
6	मकर 00:59:48	मकर 16:10:02
7	कुम्भ 01:20:15	कुम्भ 16:30:28
8	मीन 01:20:15	मीन 16:10:02
9	मेष 00:59:48	मेष 15:49:35
10	वृष 00:39:22	वृष 15:29:09
11	मिथुन 00:39:22	मिथुन 15:49:35
12	कर्क 00:59:48	कर्क 16:10:02

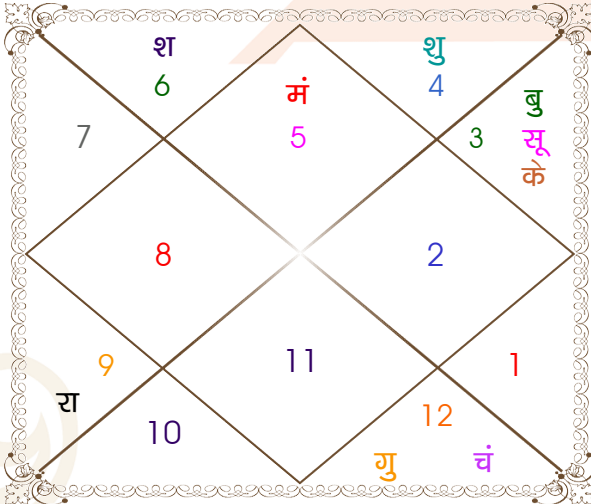
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	16:30:28
2	कन्या	13:21:01
3	तुला	13:33:12
4	वृश्चिक	15:29:09
5	धनु	17:17:18
6	मकर	17:51:25
7	कुम्भ	16:30:28
8	मीन	13:21:01
9	मेष	13:33:12
10	वृष	15:29:09
11	मिथुन	17:17:18
12	कर्क	17:51:25

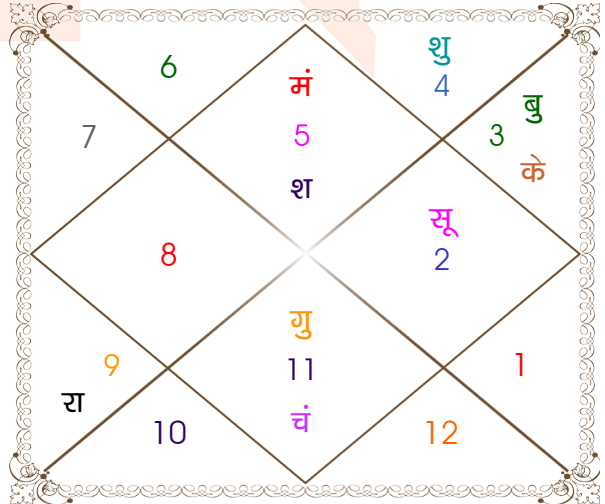
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 2 वर्ष 3 मास 2 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
03/07/2010	04/10/2012	05/10/2031	04/10/2048	05/10/2055
04/10/2012	05/10/2031	04/10/2048	05/10/2055	05/10/2075
00/00/0000	शनि 08/10/2015	बुध 03/03/2034	केतु 02/03/2049	शुक्र 04/02/2059
00/00/0000	बुध 17/06/2018	केतु 28/02/2035	शुक्र 03/05/2050	सूर्य 04/02/2060
00/00/0000	केतु 27/07/2019	शुक्र 29/12/2037	सूर्य 07/09/2050	चंद्र 05/10/2061
00/00/0000	शुक्र 26/09/2022	सूर्य 04/11/2038	चंद्र 09/04/2051	मंगल 05/12/2062
00/00/0000	सूर्य 08/09/2023	चंद्र 05/04/2040	मंगल 05/09/2051	राहु 04/12/2065
00/00/0000	चंद्र 08/04/2025	मंगल 02/04/2041	राहु 22/09/2052	गुरु 04/08/2068
00/00/0000	मंगल 18/05/2026	राहु 20/10/2043	गुरु 29/08/2053	शनि 05/10/2071
03/07/2010	राहु 24/03/2029	गुरु 25/01/2046	शनि 08/10/2054	बुध 05/08/2074
राहु 04/10/2012	गुरु 05/10/2031	शनि 04/10/2048	बुध 05/10/2055	केतु 05/10/2075

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
05/10/2075	05/10/2081	05/10/2091	05/10/2098	05/10/2116
05/10/2081	05/10/2091	05/10/2098	05/10/2116	04/07/2130
सूर्य 23/01/2076	चंद्र 05/08/2082	मंगल 02/03/2092	राहु 18/06/2101	गुरु 24/11/2118
चंद्र 23/07/2076	मंगल 06/03/2083	राहु 21/03/2093	गुरु 12/11/2103	शनि 06/06/2121
मंगल 28/11/2076	राहु 04/09/2084	गुरु 25/02/2094	शनि 18/09/2106	बुध 12/09/2123
राहु 23/10/2077	गुरु 04/01/2086	शनि 05/04/2095	बुध 06/04/2109	केतु 18/08/2124
गुरु 11/08/2078	शनि 05/08/2087	बुध 02/04/2096	केतु 24/04/2110	शुक्र 19/04/2127
शनि 24/07/2079	बुध 04/01/2089	केतु 29/08/2096	शुक्र 24/04/2113	सूर्य 05/02/2128
बुध 29/05/2080	केतु 05/08/2089	शुक्र 29/10/2097	सूर्य 19/03/2114	चंद्र 06/06/2129
केतु 04/10/2080	शुक्र 05/04/2091	सूर्य 06/03/2098	चंद्र 18/09/2115	मंगल 13/05/2130
शुक्र 05/10/2081	सूर्य 05/10/2091	चंद्र 05/10/2098	मंगल 05/10/2116	राहु 04/07/2130

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 2 वर्ष 2 मा 29 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल 08/04/2025 18/05/2026	शनि - राहु 18/05/2026 24/03/2029	शनि - गुरु 24/03/2029 05/10/2031	बुध - बुध 05/10/2031 03/03/2034	बुध - केतु 03/03/2034 28/02/2035
मंगल 02/05/2025	राहु 21/10/2026	गुरु 25/07/2029	बुध 07/02/2032	केतु 24/03/2034
राहु 01/07/2025	गुरु 09/03/2027	शनि 19/12/2029	केतु 29/03/2032	शुक्र 23/05/2034
गुरु 24/08/2025	शनि 21/08/2027	बुध 29/04/2030	शुक्र 23/08/2032	सूर्य 10/06/2034
शनि 27/10/2025	बुध 15/01/2028	केतु 22/06/2030	सूर्य 06/10/2032	चंद्र 11/07/2034
बुध 24/12/2025	केतु 16/03/2028	शुक्र 23/11/2030	चंद्र 18/12/2032	मंगल 01/08/2034
केतु 16/01/2026	शुक्र 05/09/2028	सूर्य 08/01/2031	मंगल 07/02/2033	राहु 24/09/2034
शुक्र 25/03/2026	सूर्य 27/10/2028	चंद्र 26/03/2031	राहु 19/06/2033	गुरु 11/11/2034
सूर्य 14/04/2026	चंद्र 22/01/2029	मंगल 19/05/2031	गुरु 14/10/2033	शनि 08/01/2035
चंद्र 18/05/2026	मंगल 24/03/2029	राहु 05/10/2031	शनि 03/03/2034	बुध 28/02/2035
बुध - शुक्र 28/02/2035 29/12/2037	बुध - सूर्य 29/12/2037 04/11/2038	बुध - चंद्र 04/11/2038 05/04/2040	बुध - मंगल 05/04/2040 02/04/2041	बुध - राहु 02/04/2041 20/10/2043
शुक्र 19/08/2035	सूर्य 13/01/2038	चंद्र 17/12/2038	मंगल 26/04/2040	राहु 20/08/2041
सूर्य 10/10/2035	चंद्र 08/02/2038	मंगल 17/01/2039	राहु 19/06/2040	गुरु 22/12/2041
चंद्र 04/01/2036	मंगल 26/02/2038	राहु 04/04/2039	गुरु 06/08/2040	शनि 18/05/2042
मंगल 05/03/2036	राहु 14/04/2038	गुरु 12/06/2039	शनि 03/10/2040	बुध 27/09/2042
राहु 07/08/2036	गुरु 25/05/2038	शनि 02/09/2039	बुध 23/11/2040	केतु 21/11/2042
गुरु 23/12/2036	शनि 13/07/2038	बुध 14/11/2039	केतु 14/12/2040	शुक्र 25/04/2043
शनि 05/06/2037	बुध 26/08/2038	केतु 15/12/2039	शुक्र 13/02/2041	सूर्य 10/06/2043
बुध 29/10/2037	केतु 14/09/2038	शुक्र 10/03/2040	सूर्य 03/03/2041	चंद्र 27/08/2043
केतु 29/12/2037	शुक्र 04/11/2038	सूर्य 05/04/2040	चंद्र 02/04/2041	मंगल 20/10/2043
बुध - गुरु 20/10/2043 25/01/2046	बुध - शनि 25/01/2046 04/10/2048	केतु - केतु 04/10/2048 02/03/2049	केतु - शुक्र 02/03/2049 03/05/2050	केतु - सूर्य 03/05/2050 07/09/2050
गुरु 08/02/2044	शनि 30/06/2046	केतु 13/10/2048	शुक्र 12/05/2049	सूर्य 09/05/2050
शनि 18/06/2044	बुध 16/11/2046	शुक्र 07/11/2048	सूर्य 03/06/2049	चंद्र 20/05/2050
बुध 13/10/2044	केतु 12/01/2047	सूर्य 14/11/2048	चंद्र 08/07/2049	मंगल 27/05/2050
केतु 30/11/2044	शुक्र 25/06/2047	चंद्र 27/11/2048	मंगल 02/08/2049	राहु 15/06/2050
शुक्र 17/04/2045	सूर्य 14/08/2047	मंगल 05/12/2048	राहु 05/10/2049	गुरु 02/07/2050
सूर्य 29/05/2045	चंद्र 03/11/2047	राहु 28/12/2048	गुरु 01/12/2049	शनि 23/07/2050
चंद्र 06/08/2045	मंगल 31/12/2047	गुरु 17/01/2049	शनि 06/02/2050	बुध 10/08/2050
मंगल 23/09/2045	राहु 26/05/2048	शनि 09/02/2049	बुध 08/04/2050	केतु 17/08/2050
राहु 25/01/2046	गुरु 04/10/2048	बुध 02/03/2049	केतु 03/05/2050	शुक्र 07/09/2050

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

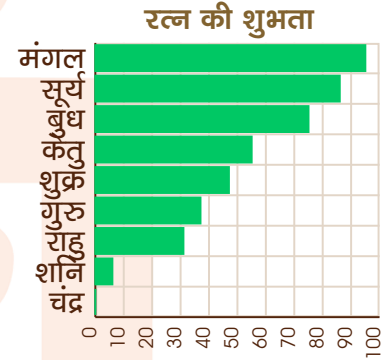
मूलांक	3
भाग्यांक	4
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 4
शत्रु अंक	1, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	95%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, सुख
माणिक्य	सूर्य	86%	धनार्जन, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	75%	धनार्जन, धन
लहसुनिया	केतु	55%	धनार्जन
हीरा	शुक्र	47%	व्यय, व्यावसायिक हानि, पराक्रम हानि
पुखराज	गुरु	37%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट
गोमेद	राहु	31%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना
नीलम	शनि	6%	धन हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	04/10/2012	92%	0%	100%	62%	56%	22%	6%	31%	55%
शनि	05/10/2031	73%	0%	83%	81%	37%	55%	31%	44%	34%
बुध	04/10/2048	92%	0%	95%	87%	37%	55%	6%	31%	55%
केतु	05/10/2055	73%	0%	100%	75%	37%	55%	0%	6%	67%
शुक्र	05/10/2075	73%	0%	95%	81%	37%	61%	19%	44%	61%
सूर्य	05/10/2081	98%	0%	100%	75%	49%	22%	0%	6%	34%
चंद्र	05/10/2091	92%	0%	95%	81%	37%	47%	6%	6%	34%
मंगल	05/10/2098	92%	0%	100%	62%	49%	47%	6%	6%	61%
राहु	05/10/2116	73%	0%	83%	75%	37%	55%	19%	53%	34%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090 21/05/2091-02/07/2093	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
अशुभ
सम
शुभ

क्षेत्र

पराक्रम
दम्पति
दुर्घटना से बचाव
बदनामी
धनार्जन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरान्त आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात् आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये

पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकारत प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(04/10/2012 - 05/10/2031)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 04/10/2012 को आरम्भ और 05/10/2031 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है।

शनि आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है और लोग बहुधा इससे डरते हैं। लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में यह विलम्ब और बाधाएं उत्पन्न करता है। फल प्राप्ति की दिशा में जातक को कठिन परिश्रम के लिये प्रेरित कर यह उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि चौथे, आठवें और ग्यारहवें भाव पर है और इन भावों के कारकत्व पर इसका प्रभाव है। द्वितीय भाव, जिसमें यह स्थित है, सम्पत्ति, लाभ, सांसारिक सुख, दायीं आँख, कल्पनाशक्ति, जिह्वा, दाँत तथा पारिवारिक सदस्यों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

द्वितीय भाव, जो पारिवारिक सदस्यों का भाव है, में स्थित महादशा स्वामी शनि भाव को प्रबलित कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको स्वास्थ्य की कोई गम्भीर समस्या अथवा दुर्घटना नहीं होगी और आप प्रसन्न रहेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

द्वितीय भाव स्थित शनि अपने भाव को प्रबलित कर रहा है। इस दशा के दौरान आपके संसाधनों और चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सम्पत्ति का लाभ उठाएंगे और अनीति का सहारा भी लेंगे।

व्यवसाय :

आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, सम्पत्ति तथा साहस के स्वामी शनि की द्वितीय भाव में स्थिति के कारण व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ होंगे। सम्पत्ति का भाव आपको पर्याप्त धन और धनोपार्जन के स्रोत प्रदान करेगा। यदि आप नौकरीपेशा हैं तो आप की पदोन्नति के अनेक मार्ग खुलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो अनेक नये उद्यम आपके मस्तिष्क में उभरेंगे और आप पर्याप्त धन अर्जित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

यह दशा आपके पारिवारिक जीवन के लिए बहुत अनुकूल नहीं है। आपके पारिवारिक जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। आपको पारिवारिक सुख नहीं मिलेगा क्योंकि आपका दूसरी स्त्रियों की ओर झुकाव है और आप दूसरों की सम्पत्ति हड़पना चाहेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति में विकास के लिए यह दशा अनुकूल नहीं है।

**अंतर्दशा :- शनि - मंगल
(08/04/2025 - 18/05/2026)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 04/10/2012 को प्रारंभ होकर 05/10/2031 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 08/04/2025 को प्रारंभ होकर 18/05/2026 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रूपरेखा आदि का परिचायक है।

इस अवधि में आप जल्दबाज, ऊर्जावान, साहसी और महत्वाकांक्षी होंगे मगर दुर्घटना का खतरा होगा। घरेलू जीवन में थोड़ी अशांति हो सकती है। आपके जीवनसाथी साहसी मगर क्रोधी स्वभाव के हो सकते हैं। आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आप मंगली हैं, अतः आपके जीवनसाथी भी मंगली हों, तो उत्तम रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन हनुमान मंदिर में जाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- शनि - राहु
(18/05/2026 - 24/03/2029)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/10/2012 को प्रारंभ होकर 05/10/2031 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 18/05/2026 को प्रारंभ होकर 24/03/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। राहु छया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। पंचम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप संतान से घनिष्ठ रहेंगे। समाज और मित्रवर्ग में लोकप्रिय होंगे। प्रेमप्रसंग में सफल हो सकते हैं। हृदय रोग से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - गुरु
(24/03/2029 - 05/10/2031)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है आपके लिए यह 04/10/2012 को प्रारंभ होकर 05/10/2031को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 2 वर्ष 6 मास 12 दिन की होगी जो आपके लिए 24/03/2029 को प्रारंभ होकर 05/10/2031 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप अप्रसन्न हो सकते हैं, मगर दयालु होंगे। पापकर्मों में लिप्त हो सकते हैं मगर दिखावा करेंगे कि बहुत धर्मात्मा हैं। विषय-वासना में रुचि हो सकती है। प्रत्येक कदम सावधानी से उठाना आवश्यक है, अन्यथा बदनाम हो सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल, अंगूठी को कच्चे दूध से धोकर, प्रार्थना और बृहस्पति मंत्र के 99 जाप के बाद, दायें हाथ की तर्जनी में धारण करें।